बदलती हुई सांस्कृतिक परंपराएँ

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» बदलती हुई सांस्कृतिक परंपराएँ: पुनर्जागरण का परिचय

प्रश्न 1 (आसान). पुनर्जागरण शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है?
उत्तर – पुनर्जन्म या 'Rebirth'

प्रश्न 2 (आसान). पुनर्जागरण किस काल से किस काल तक चला?
उत्तर – 14वीं से 17वीं शताब्दी के अंत तक

प्रश्न 3 (मध्यम). पुनर्जागरण के दौरान विकसित हुई 'शहरी संस्कृति' की कोई एक विशेषता बताओ।
उत्तर – नगरों के लोग खुद को गाँव के लोगों से अधिक सभ्य समझने लगे थे। नगर कला और ज्ञान के केंद्र बन गए।

प्रश्न 4 (कठिन). मुद्रण के आविष्कार ने पुनर्जागरण को कैसे प्रभावित किया?
उत्तर – मुद्रण से किताबें सस्ती हुईं और दूर-दराज के लोगों तक ज्ञान आसानी से पहुँचने लगा, जिससे नए विचारों का प्रसार बहुत तेज़ी से हुआ।

» इटली के नगरों का पुनरुत्थान और नगर-राज्यों का उदय

प्रश्न 5 (आसान). इटली में कौन से दो नगर-राज्य सबसे ज़्यादा जीवंत थे?
उत्तर – वेनिस और जेनोआ

प्रश्न 6 (आसान). इटली के नगर-राज्यों में राजनीतिक रूप से कौन शक्तिशाली नहीं था?
उत्तर – धर्माधिकारी और सामंत वर्ग

प्रश्न 7 (मध्यम). स्वतंत्र नगर-राज्यों के उदय में व्यापारियों और महाजनों की क्या भूमिका थी?
उत्तर – धनी व्यापारी और महाजन नगर के शासन में सक्रिय रूप से भाग लेते थे, जिससे नागरिकता की भावना पनपी।

प्रश्न 8 (कठिन). पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन के बाद इटली के नगरों का पुनरुत्थान कैसे संभव हुआ, संक्षेप में समझाइए।
उत्तर – पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन के बाद इटली के नगरों का पुनरुत्थान बाइजेंटाइन और इस्लामी देशों के साथ व्यापार बढ़ने और सिल्क रूट के फिर से सक्रिय होने के कारण संभव हुआ। इससे बंदरगाह फिर से आबाद हुए और धनी व्यापारी वर्गों ने राजनीतिक शक्ति हासिल की, जिससे वे स्वतंत्र नगर-राज्य बन पाए।

» विश्वविद्यालय और मानवतावाद

प्रश्न 9 (आसान). यूरोप में सबसे पहले विश्वविद्यालय किस देश में स्थापित हुए?
उत्तर – इटली

प्रश्न 10 (आसान). कौन से दो इटालियन विश्वविद्यालय कानून के अध्ययन के लिए प्रसिद्ध थे?
उत्तर – पादुआ और बोलोग्ना

प्रश्न 11 (मध्यम). फ्रांचेस्को पेट्रार्क किस बात पर ज़ोर देते थे?
उत्तर – प्राचीन यूनानी और रोमनों के वास्तविक शब्दों के माध्यम से पुरानी संस्कृति को समझना।

प्रश्न 12 (कठिन). मानवतावाद ने कौन से पाँच मुख्य विषय पढ़ाने वाले शिक्षकों को संदर्भित किया?
उत्तर – व्याकरण, अलंकारशास्त्र, कविता, इतिहास और नीतिदर्शन।

» इतिहास का मानवतावादी दृष्टिकोण

प्रश्न 13 (आसान). मानवतावादियों ने 'आधुनिक युग' की शुरुआत किस शताब्दी से मानी?
उत्तर – पंद्रहवीं शताब्दी से।

प्रश्न 14 (आसान). मानवतावादियों ने किस साम्राज्य के टूटने के बाद 'अंधकार युग' की शुरुआत मानी?
उत्तर – रोमन साम्राज्य के।

प्रश्न 15 (मध्यम). मानवतावादियों ने 'मध्यकाल' और 'अंधकार युग' जैसी अवधारणाएँ क्यों गढ़ीं?
उत्तर – उन्होंने ऐसा इसलिए किया ताकि वे 'रोमन साम्राज्य के पतन' के बाद के उस काल को अलग कर सकें जब उन्हें लगता था कि सभ्यता 'गिर गई' थी और 'ज्ञान का अभाव' था, और वे अपने समय को एक 'नए युग' के रूप में दिखा सकें।

प्रश्न 16 (कठिन). इतिहास के मानवतावादी दृष्टिकोण ने 'आधुनिक' युग की क्या पहचान स्थापित की, और इसका क्या महत्व था?
उत्तर – इस दृष्टिकोण ने पंद्रहवीं शताब्दी को 'आधुनिक युग' की शुरुआत माना, जिसकी पहचान प्राचीन यूनानी और रोमन 'ज्ञान के पुनरुत्थान' (revival of knowledge) और 'मानवीय क्षमताओं' पर ज़ोर देने से थी। इसका महत्व यह था कि इसने इतिहास को 'धर्म केंद्रित' नज़रिए से हटाकर 'मानव केंद्रित' बनाया, जिससे समाज और विज्ञान में नए विकास के रास्ते खुले।

» विज्ञान और दर्शन: अरबों का योगदान

प्रश्न 17 (आसान). मध्यकाल में यूनानी और रोमन ज्ञान का 'प्रचार-प्रसार' किसने नहीं किया?
उत्तर – ईसाई गिरजाघरों और मठों के विद्वानों ने

प्रश्न 18 (आसान). प्लेटो और एरिस्टोटिल के ग्रंथों का अनुवाद किस भाषा में हुआ, जिसने उन्हें यूरोप तक पहुँचाया?
उत्तर – अरबी भाषा में

प्रश्न 19 (मध्यम). अरबी अनुवादकों ने किन मुख्य वैज्ञानिक क्षेत्रों में यूनानी ज्ञान को यूरोप तक पहुँचाया? किन्हीं तीन का नाम बताओ।
उत्तर – प्राकृतिक विज्ञान, गणित, खगोल विज्ञान, औषध विज्ञान, रसायन विज्ञान।

प्रश्न 20 (कठिन). 'अलमजेस्ट' क्या था और यह किस बात का उदाहरण है कि अरबी और यूनानी ज्ञान का गहरा संबंध था?
उत्तर – 'अलमजेस्ट' टॉलेमी द्वारा रचित खगोल शास्त्र पर एक महत्वपूर्ण ग्रंथ था, जिसका अरबी में भी अनुवाद हुआ। इसमें 'अल' जैसा अरबी उपसर्ग यूनानी और अरबी भाषा के बीच गहरे संबंध को दर्शाता है।

» कलाकार और यथार्थवाद

प्रश्न 21 (आसान). कलाकार यथार्थवाद क्यों चाहते थे?
उत्तर – कला को 'हूबहू मूल आकृति जैसा' बनाने के लिए।

प्रश्न 22 (आसान). क्या रेनेसां काल से पहले भी कलाकार यथार्थवादी चित्र बनाते थे?
उत्तर – नहीं, रेनेसां से पहले यथार्थवाद पर इतना जोर नहीं था।

प्रश्न 23 (मध्यम). डोनाटेलो की मूर्तियाँ किस तरह से नई परंपरा थीं?
उत्तर – डोनाटेलो ने 'सजीव मूर्तियाँ' बनाईं, जो पहले की तुलना में ज़्यादा वास्तविक और जीवंत लगती थीं।

प्रश्न 24 (कठिन). अल्बर्ट ड्यूरर ने कला और गणित के संबंध में क्या कहा?
उत्तर – ड्यूरर ने कहा था कि 'आप अपनी कला को गणित द्वारा दिखा सकते हैं' और 'अपनी आकृति से आपकी कृति जितनी जुड़ी होगी उतना ही सुंदर आपका चित्र होगा', यानी यथार्थ और गणित का मेल ज़रूरी है।

» पुनर्जागरण वास्तुकला और कलाकारों की पहचान

प्रश्न 25 (आसान). पंद्रहवीं शताब्दी में किस शहर का भव्य पुनरुत्थान हुआ?
उत्तर – रोम

प्रश्न 26 (आसान). पुनर्जागरण वास्तुकला की 'शास्त्रीय' शैली किस साम्राज्य की शैली का पुनरुद्धार थी?
उत्तर – रोमन साम्राज्य

प्रश्न 27 (मध्यम). माइकल एंजेलो ने सिस्टीन चैपल की छत पर क्या बनाया था?
उत्तर – लेपचित्र (भित्ति चित्र)

प्रश्न 28 (कठिन). पुनर्जागरण काल में कलाकारों की पहचान में क्या मौलिक बदलाव आया और इसका एक उदाहरण दें?
उत्तर – इस काल में कलाकारों को उनके नाम से पहचाना जाने लगा, न कि उनके संघ या श्रेणी से। जैसे लियोनार्डो दा विंची को उनकी कलाकृतियों 'मोना लिसा' और 'द लास्ट सपर' के लिए जाना गया।

» प्रथम मुद्रित पुस्तकें और विचारों का प्रसार

प्रश्न 29 (आसान). जोहानेस गुटेनबर्ग ने सबसे पहले क्या छापा था?
उत्तर – बाइबल

प्रश्न 30 (आसान). छापेखाने का आविष्कार किस सदी में हुआ था?
उत्तर – 15वीं सदी

प्रश्न 31 (मध्यम). मुद्रित पुस्तकों के उपलब्ध होने से छात्रों को क्या फायदा हुआ?
उत्तर – उन्हें केवल अध्यापकों के व्याख्यानों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता था, वे खुद किताबें पढ़ सकते थे।

प्रश्न 32 (कठिन). मुद्रण प्रौद्योगिकी के आविष्कार ने नए विचारों के प्रसार को कैसे प्रभावित किया?
उत्तर – इसने विचारों और जानकारी को 'more rapidly' यानी पहले से कहीं अधिक तेज़ी से बहुत सारे लोगों तक पहुंचाया, जिससे बौद्धिक आंदोलन भी एक सीमित क्षेत्र से निकलकर फैल सके।

» मनुष्य की एक नई संकल्पना

प्रश्न 33 (आसान). मनुष्य की नई संकल्पना में किस पर नियंत्रण कम हुआ?
उत्तर – धर्म पर

प्रश्न 34 (आसान). लोग किस चीज़ों की तरफ ज़्यादा आकर्षित होने लगे थे?
उत्तर – भौतिक संपत्ति, शक्ति और गौरव

प्रश्न 35 (मध्यम). इस काल में मनुष्य के स्वभाव को कैसा माना जाने लगा?
उत्तर – बहुमुखी (यानी कई क्षमताएं रखने वाला)

प्रश्न 36 (कठिन). यह 'मनुष्य की नई संकल्पना' पिछले सामंती समाज के विचारों से किस प्रकार अलग थी?
उत्तर – सामंती समाज में लोगों को उनके वर्ग या जाति के अनुसार ही काम करने को कहा जाता था, जबकि नई संकल्पना ने माना कि इंसान की क्षमताएं असीमित हैं और वह किसी एक वर्ग तक सीमित नहीं है।

» महिलाओं की आकांक्षाएँ और उनकी स्थिति

प्रश्न 37 (आसान). पुनर्जागरण काल में महिलाओं को किस क्षेत्र से दूर रखा गया था?
उत्तर – सार्वजनिक जीवन और 'वैयक्तिकता' व 'नागरिकता' के नए विचारों से।

प्रश्न 38 (आसान). अभिजात परिवारों में शिक्षा किसे दी जाती थी, लड़कों को या लड़कियों को?
उत्तर – ज्यादातर लड़कों को।

प्रश्न 39 (मध्यम). पुनर्जागरण काल की कौन सी महिला विद्वान यूनानी और लातिनी भाषा में विख्यात थीं?
उत्तर – वेनिस निवासी कसान्द्रा फेदेले।

प्रश्न 40 (कठिन). ईसाबेला दि इस्ते ने अपने राज्य पर शासन कब किया था और उनके राज्य की क्या खासियत थी?
उत्तर – उन्होंने अपने पति की अनुपस्थिति में शासन किया था। उनका राज्य (मंटुआ) अपनी बौद्धिक प्रतिभा के लिए प्रसिद्ध था।

» ईसाई धर्म के अंतर्गत वाद-विवाद और प्रोटेस्टेंट सुधारवाद

प्रश्न 41 (आसान). प्रोटेस्टेंट सुधारवाद आंदोलन किसने शुरू किया?
उत्तर – मार्टिन लूथर ने।

प्रश्न 42 (आसान). उत्तरी यूरोप के मानवतावादी विद्वान किसकी आलोचना कर रहे थे?
उत्तर – कैथोलिक चर्च की लालची प्रथाओं और पादरियों द्वारा 'पाप-स्वीकारोक्ति' बेचने की।

प्रश्न 43 (मध्यम). मार्टिन लूथर ने ईश्वर से संबंध बनाने के बारे में क्या कहा, जो चर्च के पारंपरिक विचार से अलग था?
उत्तर – उन्होंने कहा कि 'मनुष्य को ईश्वर से संपर्क साधने के लिए पादरी की आवश्यकता नहीं है', बल्कि केवल 'ईश्वर में पूर्ण विश्वास' ही मुक्ति दिला सकता है।

प्रश्न 44 (कठिन). प्रोटेस्टेंट सुधारवाद ने यूरोप के समाज और राजनीति को कैसे प्रभावित किया, खासकर किसानों और राजाओं के संदर्भ में?
उत्तर – प्रोटेस्टेंट सुधारवाद ने किसानों को चर्च के करों और सामंतवाद के खिलाफ खड़े होने के लिए प्रेरित किया (जैसे एनाबैपटिस्ट के विचारों ने)। राजाओं को भी खुशी हुई क्योंकि मानवतावादियों ने 'कॉन्स्टैंटाइन के अनुदान' जैसे दस्तावेजों को नकली साबित करके चर्च की न्यायिक और वित्तीय शक्तियों पर उनके दावों को कमजोर कर दिया, जिससे राजाओं को चर्च के हस्तक्षेप से आज़ादी मिली।

» कॉपरनिकसीय क्रांति और ब्रह्मांड का अध्ययन

प्रश्न 45 (आसान). कोपरनिकस ने किस सिद्धांत का प्रतिपादन किया?
उत्तर – सूर्य-केंद्रित सौरमंडलीय सिद्धांत।

प्रश्न 46 (आसान). कोपरनिकस से पहले, ब्रह्मांड के केंद्र में किसे माना जाता था?
उत्तर – पृथ्वी को।

प्रश्न 47 (मध्यम). कोपरनिकस ने अपनी पुस्तक 'दि रिवॉल्यूशनिबस' को अपनी मृत्यु से पहले क्यों नहीं प्रकाशित करवाया?
उत्तर – उन्हें डर था कि उनकी नई खोज से परंपरावादी ईसाई धर्माधिकारियों में घोर-प्रतिक्रिया उत्पन्न हो सकती है।

प्रश्न 48 (कठिन). केप्लर और गैलिलियो ने कॉपरनिकस के सिद्धांत में क्या महत्वपूर्ण सुधार या पुष्टि की?
उत्तर – केप्लर ने बताया कि ग्रह सूर्य के चारों ओर 'दीर्घ वृत्ताकार' मार्ग पर परिक्रमा करते हैं, और गैलिलियो ने दूरबीन के उपयोग से 'गतिशील विश्व के सिद्धांतों की पुष्टि' की।

» वैज्ञानिक क्रांति और ज्ञान का नया दृष्टिकोण

प्रश्न 49 (आसान). वैज्ञानिक क्रांति से पहले ज्ञान प्राप्त करने का मुख्य आधार क्या था?
उत्तर – विश्वास और पुरानी मान्यताएँ।

प्रश्न 50 (आसान). किस वैज्ञानिक ने कहा कि 'ज्ञान विश्वास से हटकर अवलोकन एवं प्रयोगों पर आधारित है'?
उत्तर – गैलीलियो।

प्रश्न 51 (मध्यम). वैज्ञानिक क्रांति का अर्थ केवल नए आविष्कार करना क्यों नहीं है?
उत्तर – क्योंकि इसका मुख्य अर्थ ज्ञान प्राप्त करने के तरीके में बदलाव है, जिसमें विश्वास की जगह अवलोकन और प्रयोगों को महत्व दिया गया।

प्रश्न 52 (कठिन). वैज्ञानिक क्रांति ने किस प्रकार भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान के क्षेत्र में तेजी से अन्वेषणों को जन्म दिया?

उत्तर – वैज्ञानिक क्रांति ने ज्ञान के लिए अवलोकन और प्रयोग पर जोर दिया, जिससे इन क्षेत्रों में नए प्रयोगों और जाँच-पड़ताल की प्रक्रिया तेज हुई और अनेक नई खोजें हुईं।

» पुनर्जागरण की अवधारणा पर पुनर्विचार

प्रश्न 53 (आसान). क्या मध्यकाल को 'अंधकार का समय' कहना पूरी तरह सही है?

उत्तर – नहीं, इतिहासकार मानते हैं कि मध्यकाल में भी कई तरह के विकास हुए और इसे पूरी तरह अंधकारमय कहना 'सरलीकरण' है।

प्रश्न 54 (आसान). 'पुनर्जागरण' का शाब्दिक अर्थ क्या है?

उत्तर – फिर से जागना या फिर से जन्म लेना।

प्रश्न 55 (मध्यम). किन क्षेत्रों से यूरोप को 'ज्ञान' प्राप्त हुआ, सिर्फ यूनान और रोम के अलावा?

उत्तर – यूरोप ने 'भारत, अरब, ईरान, मध्य एशिया और चीन' जैसे एशियाई क्षेत्रों से भी ज्ञान प्राप्त किया।

प्रश्न 56 (कठिन). इतिहासकार 'पीटर बर्क' के अनुसार, बुर्खार्ट जैसे विद्वानों ने पुनर्जागरण के बारे में क्या गलती की?

उत्तर – पीटर बर्क के अनुसार, बुर्खार्ट जैसे विद्वानों ने पुनर्जागरण और मध्यकाल के 'फर्कों को कुछ बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया' यानी अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से बताया, जिससे ऐसा लगा कि दोनों में एकदम साफ विच्छेद था।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. पुनर्जागरण से पहले यूरोप में जीवन कैसा था और पुनर्जागरण के बाद इसमें क्या मुख्य बदलाव आए?

› पुनर्जागरण से पहले, जिसे 'मध्यकालीन यूरोप' कहते हैं, समाज पर चर्च का बहुत ज़्यादा नियंत्रण था। लोग ज़्यादातर गाँवों में रहते थे और उनकी सोच भी 'चर्च' और 'धर्म' पर आधारित थी। ज्ञान सीमित था और किताबें हाथ से लिखी जाती थीं, जो बहुत महँगी और कम उपलब्ध थीं।

› पुनर्जागरण के दौरान, शहरों का विकास हुआ और लोग सोचने लगे कि व्यक्ति 'अपनी इच्छा से अपना धर्म चुन सकता है' और 'अपने बारे में खुद निर्णय ले सकता है'।

› मुद्रण के आविष्कार से किताबें सस्ती और ज़्यादा लोगों तक पहुँचने लगीं, जिससे ज्ञान का प्रसार हुआ। वैज्ञानिकों ने चर्च की कई बातों को गलत साबित किया, जैसे 'पृथ्वी के केंद्र संबंधी विश्वासों को वैज्ञानिकों ने गलत सिद्ध कर दिया'।

› कला, साहित्य और विज्ञान में नए विचार और खोजें हुईं। लोगों ने 'अपने आधुनिक विश्व की तुलना यूनानी व रोमन प्राचीन दुनिया से' करना शुरू कर दिया, जिससे इतिहास की समझ भी विकसित हुई।

उत्तर – पुनर्जागरण से पहले जीवन चर्च-केंद्रित, ग्रामीण और सीमित ज्ञान वाला था। पुनर्जागरण के बाद जीवन शहरी, व्यक्ति-केंद्रित, विज्ञान आधारित और ज्ञान के व्यापक प्रसार वाला बन गया।

उदाहरण 2. इटली के नगर-राज्यों के उदय के दो प्रमुख कारण बताइए।

› पहला कारण: 'The increase in trade between the Byzantine Empire and Islamic countries' – यानी बाइजेंटाइन साम्राज्य और इस्लामी देशों के बीच व्यापार में वृद्धि।

› दूसरा कारण: 'The opening of the Silk Route by the Mongols' – यानी मंगोलों द्वारा सिल्क रूट से व्यापार की शुरुआत, जिसने पश्चिमी यूरोप के व्यापार को बढ़ावा दिया।

उत्तर – इटली के नगर-राज्यों के उदय के दो प्रमुख कारण बाइजेंटाइन और इस्लामी देशों से बढ़ता व्यापार तथा मंगोलों द्वारा सिल्क रूट का पुनः सक्रिय होना थे।

उदाहरण 3. मानवतावाद ने मध्यकालीन शिक्षा से किस प्रकार भिन्न एक नई शैक्षिक सोच प्रस्तुत की?

› पहला, मध्यकालीन शिक्षा मुख्य रूप से 'religious teaching' यानी धार्मिक शिक्षण पर केंद्रित थी, जहाँ चर्च और धर्मशास्त्र का प्रभाव अधिक था।

› दूसरा, मानवतावाद ने 'non-religious subjects' जैसे व्याकरण, अलंकारशास्त्र, कविता, इतिहास और नीतिदर्शन पर ज़ोर दिया। 'These subjects were not religious' यानी ये विषय धार्मिक नहीं थे।

› तीसरा, इसने व्यक्ति की 'discussion and debate' यानी चर्चा और वाद-विवाद के माध्यम से विकसित होने वाली क्षमताओं और कौशलों को महत्व दिया, न कि सिर्फ़ धार्मिक ग्रंथों को कंठस्थ करने को।

› चौथा, मानवतावादियों ने 'ancient Greek and Roman texts' यानी प्राचीन यूनानी और रोमन लेखकों के मूल ग्रंथों के अध्ययन को बढ़ावा दिया, ताकि 'a distinct civilization' यानी एक विशिष्ट सभ्यता को उसके वास्तविक शब्दों में समझा जा सके।

› पाँचवाँ, इसने यह विचार प्रस्तुत किया कि 'much remained to be known' जो केवल धार्मिक शिक्षण से नहीं सीखा जा सकता, यानी ज्ञान का दायरा धर्म से बाहर भी बहुत विशाल है।

उत्तर – मानवतावाद ने धार्मिक केंद्रित शिक्षा के बजाय, गैर-धार्मिक विषयों, व्यक्ति के कौशलों के विकास, और प्राचीन क्लासिकल ग्रंथों के प्रत्यक्ष अध्ययन पर ज़ोर देकर एक व्यापक और मानव-केंद्रित शैक्षिक सोच प्रस्तुत की।

उदाहरण 4. मानवतावादियों के अनुसार, 'अंधकार युग' किस काल को कहा गया और क्यों?

› पहला कदम यह है कि हम 'मानवतावादियों' की सोच को समझें। वे इंसान की बुद्धि और प्राचीन ज्ञान को महत्व देते थे।

› दूसरा, उन्होंने इतिहास को 'पीरियड्स' (कालों) में बांटा।

› तीसरा, उन्होंने रोमन साम्राज्य के पतन (गिरने) के बाद के समय को 'अंधकार युग' कहा।

› चौथा, उन्होंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उनका मानना था कि इस दौरान यूनानी और रोमन 'क्लासिकल ज्ञान' (classical knowledge) भुला दयिा गया था और चर्च का प्रभाव बहुत बढ़ गया था, जसिसे लोगों की 'आज़ाद सोच' (free thinking) दब गई थी।

उत्तर – मानवतावादियों ने रोमन साम्राज्य के पतन के बाद के काल को 'अंधकार युग' कहा, क्योंकि उनका मानना था कि उस समय प्राचीन यूनानी और रोमन ज्ञान लुप्त हो गया था और चर्च के अत्यधिक प्रभाव के कारण स्वतंत्र सोच दब गई थी।

उदाहरण 5. मध्यकाल में 'यूनानी' ज्ञान को 'यूरोप' तक पहुँचाने में 'अरबी विद्वानों' की क्या भूमिका थी?

› पहले, यह समझें कि 'यूनानी और रोमन' विद्वानों की लिखी हुई 'किताबें' ज्ञान का भंडार थीं।

› दूसरा, ये किताबें पहले केवल 'ईसाई गिरजाघरों और मठों' के पास थीं, और उनका 'प्रचार-प्रसार नहीं' हुआ था।

› तीसरा, 'अरबी अनुवादकों' ने इन 'अतीत की पांडुलिपियों' को 'सावधानीपूर्वक संरक्षण और अनुवाद' किया।

› चौथा, ये अनुवाद 'प्राकृतिक विज्ञान, गणित, खगोल विज्ञान' जैसे विषयों के थे।

› पांचवा, 'यूरोप के विद्वानों' ने इन 'अरबी अनुवादों' से ज्ञान प्राप्त किया, और इस तरह यूनानी ज्ञान यूरोप पहुंचा।

उत्तर – अरबी विद्वानों ने यूनानी और रोमन ग्रंथों का अरबी में अनुवाद करके, उन्हें संरक्षित करके और उनमें अपने वैज्ञानिक योगदान जोड़कर, मध्यकाल में इस प्राचीन ज्ञान को यूरोप तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उदाहरण 6. रेनेसां काल में यथार्थवाद लाने के लिए कलाकारों ने किन दो मुख्य विज्ञानों का अध्ययन किया?

› पहला कदम: कलाकारों को यह ज़रूरत महसूस हुई कि वे जो चित्र या मूर्तियाँ बना रहे हैं, वे 'जीवंत' लगें।

› दूसरा कदम: इस 'जीवंत' प्रभाव को लाने के लिए उन्हें मनुष्य के शरीर और उसके आस-पास की दुनिया को गहराई से समझना पड़ा।

› तीसरा कदम: उन्होंने देखा कि 'नर-कंकालों का अध्ययन करने के लिए कलाकार आयुर्विज्ञान कॉलेजों की प्रयोगशालाओं में गए।' यह था 'शरीर रचना विज्ञान' का अध्ययन।

› चौथा कदम: साथ ही, उन्हें यह भी 'मालूम हो गया कि रेखागणित के ज्ञान से चित्रकार अपने परिदृश्य को ठीक तरह से समझ सकता है।' यह था 'ज्यामिति' का अध्ययन।

उत्तर – यथार्थवाद लाने के लिए कलाकारों ने मुख्य रूप से शरीर रचना विज्ञान (Anatomy) और ज्यामिति (Geometry) का अध्ययन किया।

उदाहरण 7. पुनर्जागरण काल में वास्तुकला और कलाकारों की पहचान में क्या प्रमुख परिवर्तन आए?

› पुनर्जागरण काल में रोम शहर का भव्य पुनरुद्धार हुआ, जिससे वहाँ की 'शास्त्रीय' वास्तुकला को फिर से अपनाया गया।

› यह 'शास्त्रीय' शैली वास्तव में रोमन साम्राज्य कालीन शैली का पुनरुद्धार थी, जहाँ पुराने अवशेषों की खुदाई करके इमारतों के डिज़ाइन में सुधार किया गया।

› पोप और धनी लोगों ने इन शास्त्रीय शैली से परिचित वास्तुकारों को काम पर रखा।

› सबसे महत्वपूर्ण बदलाव यह आया कि कलाकारों को उनके काम के लिए उनके व्यक्तिगत नाम से पहचान मिली, जैसे माइकल एंजेलो और लियोनार्डो दा विंची।

› पहले कलाकारों को उनके संघ (गिल्ड) या श्रेणी के नाम से जाना जाता था, लेकिन अब उनकी व्यक्तिगत कला और कौशल को महत्व दिया गया।

उत्तर – पुनर्जागरण काल में वास्तुकला में रोमन साम्राज्य की 'शास्त्रीय' शैली का पुनरुद्धार हुआ, और कलाकारों को उनके संघ के बजाय उनके व्यक्तिगत नाम और अद्वितीय कलाकृतियों से पहचाना जाने लगा। यह कला और कलाकार दोनों के लिए एक नई पहचान का युग था।

उदाहरण 8. मान लीजिए 15वीं सदी में एक धर्मभिक्षु को एक बाइबल हाथ से लिखने में 1 साल लगता था। गुटेनबर्ग के छापेखाने ने 150 बाइबल की प्रतियां कितने समय में छापीं, अगर एक प्रति छापने में उसे 1 दिन लगा हो?

› सबसे पहले, यह समझें कि हाथ से लिखने में 1 बाइबल = 1 साल।

› अब गुटेनबर्ग के छापेखाने का समय देखते हैं। यहाँ सवाल में है 'one copy took one day', तो 1 बाइबल छापने में 1 दिन लगा।

› हमें 150 बाइबल की प्रतियां छापने का समय निकालना है।

› अगर 1 प्रति = 1 दिन, तो 150 प्रतियां = 150 दिन।

› इससे पता चलता है कि 150 दिनों में (जो लगभग 5 महीने हैं), गुटेनबर्ग ने उतनी बाइबल छापीं, जितनी हाथ से लिखने में 150 साल लग जाते!

उत्तर – गुटेनबर्ग के छापेखाने ने 150 बाइबल की प्रतियां 150 दिनों में छापीं।

उदाहरण 9. मानवतावादी विचारधारा के तहत मनुष्य की नई संकल्पना कैसे विकसित हुई?

› सबसे पहले, 'मानव जीवन पर धर्म का नियंत्रण कमजोर हुआ'। लोग सिर्फ धार्मिक नियमों के बजाय अपनी इच्छाओं और लक्ष्यों को महत्व देने लगे।

› दूसरा, 'भौतिक संपत्ति, शक्ति और गौरव से आकर्षित होने लगे'। लोगों को लगा कि जीवन में धन, सम्मान और सफलता प्राप्त करना भी महत्वपूर्ण है।

› तीसरा, 'मनुष्य के बहुमुखी स्वभाव में विश्वास बढ़ा'। यानी ये माना गया कि इंसान सिर्फ एक काम के लिए नहीं, बल्कि कई क्षेत्रों में कुशल हो सकता है।

उत्तर – मनुष्य की नई संकल्पना में धर्म का नियंत्रण कम हुआ, भौतिक लक्ष्यों को महत्व मिला और इंसान के बहुमुखी स्वभाव पर विश्वास बढ़ा।

उदाहरण 10. पुनर्जागरण काल में 'अभिजात' (noble) परिवार की महिलाओं और 'व्यापारी' परिवार की महिलाओं की स्थिति में क्या अंतर था?

› सबसे पहले, अभिजात परिवार की महिलाओं की स्थिति को समझते हैं। ये वो महिलाएं थीं जिनके परिवार बहुत अमीर और प्रभावशाली होते थे। किताब कहती है, 'सार्वजनिक जीवन में अभिजात व संपन्न परिवार के पुरुषों का प्रभुत्व था और घर-परिवार के मामले में भी वे ही निर्णय लेते थे।' मतलब, ये महिलाएं ज़्यादातर घर के कामों तक ही सीमित रहती थीं।

› अब, व्यापारी परिवार की महिलाओं को देखते हैं। इनकी स्थिति थोड़ी अलग थी। 'व्यापारी परिवारों में महिलाओं की स्थिति कुछ भिन्न थी।' जब पति व्यापार के लिए 'लंबे समय के लिए दूर-दराज़ स्थानों को व्यापार के लिए जाते थे,' तो 'उसकी पत्नी सार्वजनिक जीवन में बड़ी भूमिका निभाने के लिए बाध्य होती थी।' वे दुकानें चलाती थीं और घर का कारोबार संभालती थीं।

› तो मुख्य अंतर यह था कि अभिजात महिलाएं लगभग पूरी तरह घर तक सीमित थीं और उन्हें बाहर के फैसलों में कोई भूमिका नहीं मिलती थी, जबकि व्यापारी महिलाएं ज़रूरत पड़ने पर घर के बाहर के आर्थिक काम भी संभालती थीं, खासकर

जब उनके पति दूर होते थे। यह मजबूरी में ही सही, पर उन्हें थोड़ी ज़्यादा आज़ादी मिली।

उत्तर – अभिजात वर्ग की महिलाएं मुख्य रूप से घर तक सीमित थीं, जबकि व्यापारी वर्ग की महिलाएं पति की अनुपस्थिति में व्यवसाय संभालने जैसे सार्वजनिक कार्य भी करती थीं।

उदाहरण 11. मार्टिन लूथर ने कैथोलिक चर्च के किन मुख्य विचारों का खंडन किया, और उन्होंने अपने अनुयायियों को क्या करने का आदेश दिया?

› मार्टिन लूथर ने कैथोलिक चर्च के इस विचार का खंडन किया कि 'मनुष्य को ईश्वर से संपर्क साधने के लिए पादरी की आवश्यकता है'।

› उन्होंने 'पाप-स्वीकारोक्ति (indulgences)' जैसे दस्तावेज़ों को बेचने की प्रथा का भी खंडन किया, जो लोगों को यह विश्वास दिलाते थे कि पैसे देकर पापों से छुटकारा मिल सकता है।

› इसके बजाय, लूथर ने अपने अनुयायियों को आदेश दिया कि वे 'ईश्वर में पूर्ण विश्वास' रखें।

› उन्होंने सिखाया कि केवल 'विश्वास ही उन्हें एक सम्यक जीवन की ओर ले जा सकता है और उन्हें स्वर्ग में प्रवेश दिला सकता है'।

› उनका संदेश था कि ईश्वर के साथ सीधा व्यक्तिगत संबंध ही मुक्ति का मार्ग है, किसी बिचौलिए की ज़रूरत नहीं।

उत्तर – लूथर ने पादरी की आवश्यकता और पाप-स्वीकारोक्ति के माध्यम से पापों से मुक्ति के कैथोलिक विचारों का खंडन किया। उन्होंने अपने अनुयायियों को ईश्वर में पूर्ण विश्वास रखने और सीधे ईश्वर से जुड़ने का आदेश दिया, क्योंकि उनके अनुसार विश्वास ही मोक्ष का मार्ग है।

उदाहरण 12. कॉपरनिकस के सूर्य-केंद्रित सिद्धांत ने किस प्रकार ईसाई धर्म की पारंपरिक ब्रह्मांड संबंधी धारणा को चुनौती दी?

› सबसे पहले, पारंपरिक ईसाई धारणा को समझें: 'पृथ्वी पापों से भरी हुई है और पापों की अधिकता के कारण वह स्थिर है। पृथ्वी, ब्रह्मांड के बीच में स्थिर है जिसके चारों ओर खगोलीय गृह घूम रहे हैं।' मतलब, पृथ्वी को केंद्र माना जाता था और उसे पापी भी कहा जाता था।

› अब, कॉपरनिकस का सिद्धांत देखें: उन्होंने घोषणा की कि 'पृथ्वी समेत सारे ग्रह सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करते हैं।' यहाँ, सूर्य को केंद्र में रखा गया, पृथ्वी को नहीं।

› दोनों की तुलना करें: पारंपरिक धारणा में पृथ्वी केंद्र में थी और स्थिर थी, जबकि कॉपरनिकस के सिद्धांत में सूर्य केंद्र में है और पृथ्वी उसके चारों ओर घूमती है।

› चुनौती को स्पष्ट करें: कॉपरनिकस के सिद्धांत ने सीधे तौर पर ईसाई धर्म की उस केंद्रीय मान्यता को चुनौती दी कि मनुष्य के निवास वाली पृथ्वी ही पूरे ब्रह्मांड का केंद्र है और वह स्थिर है। इससे मनुष्य और पृथ्वी की ब्रह्मांड में विशेष स्थिति पर प्रश्नचिह्न लग गया, जो धार्मिक मान्यताओं के लिए एक बड़ा झटका था।

उत्तर – कॉपरनिकस के सूर्य-केंद्रित सिद्धांत ने ईसाई धर्म की उस पारंपरिक धारणा को सीधी चुनौती दी कि पृथ्वी ब्रह्मांड के केंद्र में स्थिर है और सभी आकाशीय पिंड उसके चारों ओर घूमते हैं। इसके बजाय, उन्होंने यह स्थापित किया कि सूर्य केंद्र में है और पृथ्वी सहित अन्य ग्रह उसके चारों ओर परिक्रमा करते हैं, जिससे पृथ्वी की 'विशेष' और 'केंद्रीय' स्थिति समाप्त हो गई।

उदाहरण 13. गैलीलियो ने किस बात पर टिप्पणी की, जिससे वैज्ञानिक क्रांति की नींव रखी गई?

› प्रश्न गैलीलियो की उस टिप्पणी के बारे में है जिसने वैज्ञानिक क्रांति को जन्म दिया।

› गैलीलियो ने कहा कि धर्मग्रंथ (जैसे बाइबल) स्वर्ग का मार्ग तो दिखाते हैं, लेकिन 'स्वर्ग कैसे चलता है' यानी ब्रह्मांड के नियम कैसे काम करते हैं, यह नहीं बताते।

› यह टिप्पणी इस बात पर जोर देती है कि ज्ञान सिर्फ धार्मिक विश्वास से नहीं, बल्कि 'अवलोकन और प्रयोगों' से प्राप्त होना चाहिए।

› यह नया दृष्टिकोण ही वैज्ञानिक क्रांति का आधार बना।

› तो गैलीलियो ने यह स्पष्ट किया कि धार्मिक विश्वासों और वैज्ञानिक समझ में अंतर है, और उन्होंने वैज्ञानिक ज्ञान के लिए 'empirical evidence' यानी अनुभवजन्य साक्ष्य पर जोर दिया।

उत्तर – गैलीलियो ने टिप्पणी की कि 'बाईबल जिस स्वर्ग का मार्ग आलोकित करता है वह स्वर्ग किस प्रकार चलता है, उसके बारे में कुछ नहीं बताता'। यह बात इस ओर इशारा करती है कि ज्ञान केवल धार्मिक विश्वासों पर नहीं, बल्कि 'अवलोकन और

प्रयोगों' पर आधारित होना चाहिए, जिसने वैज्ञानिक क्रांति की नींव रखी।

उदाहरण 14. कुछ इतिहासकार 'पुनर्जागरण' की अवधारणा को 'अतिशयोक्तिपूर्ण' क्यों मानते हैं?

› पहला कदम: हमें समझना होगा कि 'अतिशयोक्तिपूर्ण' का मतलब है किसी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहना।

› दूसरा कदम: पुनर्जागरण के समर्थकों ने कहा कि इस काल में 'यूनानी और रोमन सभ्यताओं का पुनर्जन्म हुआ' और 'मध्यकाल अंधकारमय' था।

› तीसरा कदम: लेकिन नए शोध बताते हैं कि 'पिछली शताब्दियों के विद्वान यूनानी और रोमन संस्कृतियों से परिचित थे' और 'इटली में पुनर्जागरण से जुड़े अनेक तत्व बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी में पाए जा सकते थे'।

› चौथा कदम: साथ ही, 'एशिया में प्रौद्योगिकी और कार्य-कुशलता यूनानी और रोमन लोगों की तुलना में काफी विकसित थी', और यूरोप ने सिर्फ रोम से नहीं, बल्कि 'भारत, अरब, ईरान, मध्य एशिया और चीन से भी ज्ञान प्राप्त किया'।

› पांचवां कदम: इन सब बातों से पता चलता है कि पुनर्जागरण को 'एकदम नया और मध्यकाल को पूरी तरह अंधकारमय' बताना सही नहीं है, इसलिए इसे अतिशयोक्तिपूर्ण माना गया।

उत्तर – कुछ इतिहासकार 'पुनर्जागरण' की अवधारणा को 'अतिशयोक्तिपूर्ण' मानते हैं क्योंकि वे तर्क देते हैं कि यूनानी और रोमन संस्कृतियों से परिचय मध्यकाल में भी था, पुनर्जागरण के कई तत्व पहले से मौजूद थे, और एशियाई सभ्यताओं का ज्ञान भी यूरोप के विकास में महत्वपूर्ण था। इसलिए, पुनर्जागरण को अतीत से पूर्ण विच्छेद या मध्यकाल को पूरी तरह 'अंधकारमय' कहना सही नहीं है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर पुनर्जागरण के कारणों और परिणामों पर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं। खासकर 'मुद्रण के आविष्कार' और 'शहरी संस्कृति' पर ज़्यादा ध्यान देना।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इटली के नगर-राज्यों के उदय के कारणों और उनके स्वरूप पर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं। व्यापारिक मार्गों की भूमिका और व्यापारी वर्ग के महत्व को अच्छे से समझना।

• मानवतावाद की अवधारणा और इसके प्रमुख विषयों को अच्छे से समझना, बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'Francesco Petrarch' का नाम और उनका योगदान भी याद रखना।

• यह अवधारणा 'मध्यकाल' और 'आधुनिक युग' के बीच के विभाजन को समझने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर 'लघु उत्तरीय प्रश्न' (short answer questions) आते हैं, इसलिए इसके 'मुख्य बिंदुओं' को अच्छे से याद रखना।

• यह विषय 11वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर छोटे उत्तर वाले प्रश्न (2-3 अंक) के रूप में आता है, जिसमें कलाकारों द्वारा यथार्थवाद के लिए किए गए प्रयासों या विज्ञान के योगदान के बारे में पूछा जाता है।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पुनर्जागरण के कलात्मक और सामाजिक पहलुओं को जोड़ता है। माइकल एंजेलो और लियोनार्डो दा विंची जैसे कलाकारों के नाम और उनकी कृतियों को याद रखना ज़रूरी है।

• गुटेनबर्ग और बाइबल के मुद्रण का महत्व अक्सर 3-5 अंकों के सवालों में पूछा जाता है। इसे 'a major turning point' – एक बड़ा बदलाव लाने वाला मोड़ – के रूप में समझाना महत्वपूर्ण है।

• यह अवधारणा 'मानवतावाद' के केंद्रीय विचारों में से एक है। इसकी मुख्य विशेषताओं, खासकर धर्म के नियंत्रण के कमजोर होने और 'बहुमुखी स्वभाव' पर विश्वास को उदाहरणों के साथ लिखने का अभ्यास करें।

• पुनर्जागरण काल में महिलाओं की तुलनात्मक स्थिति पर अक्सर प्रश्न आते हैं – अभिजात और व्यापारी वर्ग की महिलाओं के अंतर को अच्छे से समझ लेना।

• कॉपरनिकस, केप्लर और गैलिलियो के योगदान को स्पष्ट रूप से याद रखना। यह प्रश्न अक्सर आता है कि उनकी खोजों ने किस प्रकार पारंपरिक धार्मिक मान्यताओं को चुनौती दी।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'वैज्ञानिक क्रांति क्या है' और 'गैलीलियो का योगदान' अक्सर सीधे प्रश्न के रूप में पूछे जाते हैं। इन बिंदुओं को अच्छे से समझ कर लिखो।

• इस टॉपिक से 'पुनर्जागरण की पारंपरिक धारणा की आलोचना' या 'एशियाई सभ्यताओं के योगदान' पर सीधे सवाल आ सकते हैं, इसलिए दोनों पक्षों को अच्छे से समझना बहुत ज़रूरी है।

एक नज़र में रिवीज़न

› पुनर्जागरण: 14-17वीं सदी यूरोप, सांस्कृतिक 'पुनर्जन्म', शहरीकरण, मुद्रण, व्यक्ति-केंद्रित सोच।
› पश्चिमी रोमन साम्राज्य पतन के बाद इटली के नगरों का व्यापार से पुनरुत्थान और स्वतंत्र नगर-राज्यों का उदय।
› इटली में विश्वविद्यालय खुले, कानून का अध्ययन बढ़ा। मानवतावाद ने गैर-धार्मिक विषयों पर जोर दिया।
› मानवतावादियों ने 'अंधकार युग' और 'मध्यकाल' की अवधारणा गढ़ी; 15वीं शताब्दी से 'आधुनिक युग' माना।
› कलाकारों ने यथार्थवाद के लिए शरीर रचना विज्ञान व ज्यामिति का अध्ययन किया।
› रोम का पुनरुद्धार, 'शास्त्रीय' वास्तुकला, कलाकारों की पहचान नाम से
› गुटेनबर्ग के छापेखाने ने बाइबल छापी, ज्ञान का तीव्र प्रसार किया।
› मानवतावाद: धर्म का नियंत्रण कम, भौतिक संपत्ति-शक्ति-गौरव में रुचि, मनुष्य का स्वभाव बहुमुखी।
› पुनर्जागरण में महिलाओं की सार्वजनिक भूमिका सीमित, व्यापारी वर्ग की भूमिका ज़्यादा, कुछ ने शिक्षा पाई।
› कोपरनिकस का सूर्य-केंद्रित सिद्धांत, जिसने पृथ्वी-केंद्रित सोच बदली।
› वैज्ञानिक क्रांति = ज्ञान विश्वास से हटकर अवलोकन और प्रयोग पर आधारित।
› पुनर्जागरण अतीत से पूर्ण विच्छेद नहीं, मध्यकाल पूरी तरह अंधकारमय नहीं; एशियाई योगदान महत्वपूर्ण।